

अपात्र वि. (तत्.) (किन्हीं नियमादि के अनुसार) किसी पद या दान वस्तु आदि को प्राप्त करने के लिए अयोग्य व्यक्ति, कुपात्र, शैक्षिक दृष्टि से पूर्णतः अर्हता प्राप्त होने पर भी अनुभवहीनता के कारण वह इस पदोन्नति के लिए अपात्र है विलो. पात्र।

अपात्रीकरण पुं. (तत्.) अयोग्य ठहराना, निंदित करना, श्रद्धा के दान आदि लेने के लिए अयोग्य घोषित करना।

अपाद वि. (तत्.) पादहीन, बिना पैरवाला, पंगु।

अपादान पुं. (तत्.) 1. अलगाव, विभाग 2. व्याकरण में पाँचवाँ कारक या पाँचवीं विभक्ति जिसका संकेतक 'से' (अलगाव- बोधक) है उदा. 'पेड़ से पत्ता गिरा'; इस वाक्य में 'से' अपादान कारक का सूचक है।

अपान पुं. (तत्.) 1. पाँच प्रकार की प्राण वायु में से एक जो अधोमुखी होता है 2. अंदर खींची जानेवाली साँस 3. गुदा से निकलने वाली वायु, अधोवायु 4. गुदा वि. (तत्.) 1. सर्व दुःख विनाशक, ईश्वर का विशेषणवाची शब्द 2. वि. जो पान अर्थात् पीने के योग्य न हो।

अपानद्वार पुं. (तत्.) अपानवायु (नीचे की ओर रहने वाली प्राण वायु) के निकलने का द्वार या मार्ग, गुदामार्ग।

अपानन पुं. (तत्.) 1. श्वसन प्रक्रिया, साँस लेने की क्रिया 2. मल-मूत्र त्याग।

अपानृत वि. (तत्.) 1. जो अनृत अर्थात् असत्य न हो, अमिथ्या, सत्य।

अपाप पुं. (तत्.) जो पाप न हो, पुण्य, सुकर्म। वि. (तत्.) निष्पाप, पापरहित विलो. पाप।

अपामार्ग पुं. (तत्.) आयु. प्रयोग में लाई जाने वाली वनस्पति, चिड़चिड़ी नामक औषधीय पौधा।

अपाय पुं. (तत्.) 1. अलगाव 2. हट जाना 3. नाश अनिष्ट, हानि। वि. 1. पंगु 2. निरुपाय।

अपायकर वि. (तत्.) 1. जिससे क्षति हो 2. अनिष्टकर, हानिकर, अस्वास्थ्य कर।

अपायी वि. (तत्.) 1. हानिप्रद 2. नष्ट होने वाला 3. अलग रहने वाला 4. अदृश्य।

अपार वि. (तत्.) जिसे पार न किया जा सके, असीम, अपरिमित, अत्यंत, अनंत पुं. 1. नदी का दूसरा किनारा 2. सागर, समुद्र।

अपारग वि. (तत्.) 1. जो पार नहीं जा सके। 2. जिसे देखा न जा सके 3. अयोग्य।

अपारगम्य वि. (तत्.) 1. पार न किए जाने योग्य, आखिर तक नहीं पहुँचने योग्य। 2. जिसे स्थिति या विषय की पूरी जानकारी न हो।

अपारदर्शक वि. (तत्.) जो पारदर्शी न हो, जिसके पार जा सके, अपारदर्शी विलो. पारदर्शक।

अपारदर्शिता स्त्री. (तत्.) 1. पारदर्शी न होने की स्थिति 2. वह स्थिति जिसमें प्रकाश दूसरी तरफ न जा सके विलो. पारदर्शिता।

अपारमुखी वि. (तत्.) 1. अनेक मुखों वाला 2. अनंत धाराओं वाला।

अपारार्णव [अपार+अर्णव] पुं. (तत्.) अपार समुद्र, असीम सागर।

अपार्थक वि. (तत्.) 1. निरर्थक, अर्थहीन, अनर्थक, व्यर्थ 2. प्रभावशून्य पुं. निरर्थक, असंगत, असत्य तथा निष्प्रयोजन होने के दोष से युक्त (उक्ति) (एक काव्य दोष)।

अपार्थिव वि. (तत्.) जो पृथ्वी से संबंधित न हो, अभौतिक, अलौकिक विलो. पार्थिव।

अपालन पुं. (तत्.) 1. नियम, व्यवस्था आदि का पालन न किया जाना 2. आज्ञा के अनुरूप कार्य न करना।

अपावन वि. (तत्.) अपवित्र, अशुद्ध।

अपावरण पुं. (तत्.) 1. खोलना 2. ढकना 3. छिपाना।